

गन्ने हेतु अतिरिक्त भुगतान

प्रलिस के लयः

गन्ना, उचतऱ और लाभकारी मूल्य (Fair and Remunerative Price- FRP)

मेन्स के लयः

कृषऱ मूल्य नरऱधारण, भारतीय अरथवयवसुथा में चीनी उत्पादन, गन्ना उदुयोग के समकष चुनौतयऱँ

चरुा में कयऱँ?

भारत सरुकार ने सहकारी चीनी मलऱँ दवारा कसऱनों को गन्ना हेतु कयऱँ गए अतिरऱकऱत मूल्य भुगतान को "व्यावसायकऱ वयय" के रूप में दावा करने की अनुमताऱऱदान करके एक महत्तुवपूरण कदम उठाया है ।

गन्ने हेतु अतिरऱकऱत भुगतान का मुदुदाः

- गन्ना भारत में एक प्रमुख फसल है, खासकर महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमलिनाडु जैसे राजुयऱँ में ।
- केंद्र प्रतुयेक वरुष गन्ने के लयऱ **उचतऱ और लाभकारी मूल्य** नरऱधारतऱ करता है, यह चीनी मलऱँ दवारा कसऱनों को उनके गन्ने की खरऱद के लयऱ भुगतान की जाने वाली नुनतम राशऱ है ।
- हालाँकऱ कऱछ सहकारी चीनी मलऱँ, वशऱष रूप से महाराष्ट्र में कसऱनों को प्रोत्साहन अथवा बोनस के रूप में FRP से अधकऱ का भुगतान करती है । इसे अतिरऱकऱत गन्ना भुगतान (**Excess Cane Payment**) कहा जाता है ।
- इस अतिरऱकऱत गन्ना भुगतान के कारण सहकारी चीनी मलऱँ और आयकर वभऱग के बीच कर ववऱद खडुा हो गया है ।
 - ये मलऱँ अतिरऱकऱत भुगतान का दावा व्यावसायकऱ वयय के रूप में करती हैं, जबकऱ वभऱग इसे मुनाफे का वतरऱण मानता है और इन पर कसऱी भी प्रुकार की छूट की अनुमताऱ नहीं देता है ।

ववऱद नपऱटान की प्रुकरयऱः

- भारत सरुकार ने वतऱतऱ अधनऱयऱम में संशोधन करते हुए वरुष 2015-16 के केंदुरीय बजट में सहकारी चीनी मलऱँ को अपनी व्यावसायकऱ आय की गणना के लयऱ कटौती के रूप में अतिरऱकऱत गन्ना भुगतान का दावा करने की अनुमताऱ दी । हालाँकऱ यह 2016-17 मूल्यांकन वरुष से लागू कयऱऱ गया था ।
- भारत सरुकार ने सत्र 2023-24 के केंदुरीय बजट में सत्र 2015-16 से पहले के सभी वतऱतऱय वरुषऱँ के लयऱ कटौती के लाभ में वृदुधकी है । यह आयकर अधनऱयऱम की धारा 155 में संशोधन कर कयऱऱ गया था ।
- इस कदम से वतऱतऱय वरुष 2015-16 से पहले कयऱऱ गए भुगतान के संबंघ में लंबतऱ कर मांगऱँ और मुकदमेबाजऱी के वरऱदुध सहकारी चीनी मलऱँ को लगभग 10,000 करोडु रुपए की राहत मलऱऱने की उम्मीद है ।

उचतऱ और लाभकारी मूल्य (FRP):

- परचयः
 - यह सरुकार दवारा नरऱधारतऱ मूल्य है, चीनी मलऱँ कसऱनों से गन्ने की खरऱद इस मूल्य पर करने को बाधुय है ।
- भुगतान और समझऱँताः
 - मलऱँ को कानूनी तऱँर पर कसऱनों से खरऱदे गए गन्ने के लयऱ उनुँ FRP का भुगतान करना आवशुयक है ।
 - मलऱँ कसऱनों के साथ समझऱँते पर हसुताकषर करने का वकऱलप चुन सकती हैं, जसऱसे उनुँ कशऱतऱँ में FRP का भुगतान करने की अनुमताऱ मलऱऱ सके ।
 - वलऱंबतऱ भुगतान पर प्रतुवरुष 15% तक का बयऱज शुलुक लग सकता है और चीनी आयुकुत, मलऱँ की संपतुतयऱँ को संलगन करके भुगतान न कयऱऱ गये FRP की वसूली कर सकते हैं ।

■ शासी वनियम:

- गन्ने का मूल्य निर्धारण **आवश्यक वस्तु अधिनियम (ECA), 1955** के तहत जारी गन्ना (नियंत्रण) आदेश, 1966 के वैधानिक प्रावधानों द्वारा नियंत्रित होता है।
- नयियों के मुताबिक, FRP का भुगतान गन्ना डिलीवरी के 14 दिनों के अंदर किया जाना चाहिये।

■ निर्धारण एवं घोषणा:

- FRP का निर्धारण **कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP)** की सिफारिशों के आधार पर किया जाता है।
- **आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (CCEA)** ने FRP की घोषणा की।
- FRP की घोषणा आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (CCEA) द्वारा की जाती है।

■ वित्तीय कारण:

- FRP में वित्तीय कारणों को ध्यान में रखा जाता है जिसमें **गन्ना उत्पादन की लागत, वैकल्पिक फसलों से प्राप्त नधि, कृषि वस्तुओं की कीमतों में रुझान, उपभोक्ताओं को चीनी की उपलब्धता, चीनी का बिक्री मूल्य, गन्ने से चीनी की रकवरी और गन्ना उत्पादकों के लिये आय सीमा** शामिल है।



Prices of Sugarcane are determined by Central and State Government.



Fair and Remunerative Price (FRP)

- The Central Government announces FRP which are determined on the recommendation of the CACP and announced by the Cabinet Committee on Economic Affairs (CCEA).
 - The FRP is based on the Rangarajan Committee report on reorganising the sugarcane industry.



State Advised Prices (SAP)

- The SAP is announced by the Governments of key sugarcane producing states.
 - The price is calculated by the experts, who calculate the entire economics of the crop by taking input cost and then suggest to the government, which may agree or not.

#EconomyAndEndeavour

//

गन्ना:

- **तापमान:** गर्म और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27°C के बीच ।
- **वर्षा:** लगभग 75-100 सेमी. ।
- **मिट्टी का प्रकार:** गहरी समृद्ध दोमट मिट्टी ।
- **शीर्ष गन्ना उत्पादक राज्य:** उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, बिहार ।
- ब्राज़ील के बाद भारत गन्ने का **दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक** है ।
- इसे बलुई दोमट से लेकर **चकिनी दोमट मिट्टी तक** सभी प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है क्योंकि इसके लिये अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की आवश्यकता होती है ।
- इसमें बुवाई से लेकर कटाई तक शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है ।
- यह चीनी, खांडसारी, गुड़ और शीरे का मुख्य स्रोत है ।
- चीनी उपकरणों को वित्तीय सहायता बढ़ाने की योजना (SEFASU) और **जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति**, गन्ना उत्पादन एवं चीनी उद्योग को समर्थन देने के लिये सरकार की दो योजनाएँ हैं ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

????????????????????

प्रश्न. भारत में गन्ने की खेती के वर्तमान रुझान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:(2020)

1. जब 'बड चपि सेटगि' को नर्सरी में उगाया जाता है और मुख्य खेत में प्रत्यारोपित किया जाता है, तो बीज सामग्री में पर्याप्त बचत होती है ।
2. जब सेटों का सीधा रोपण किया जाता है, तो कई कलियों वाले सेटों की तुलना में एकल कलियों वाले सेटों में अंकुरण प्रतशित बेहतर होता है ।
3. यदि पौधों को सीधे रोपने पर खराब मौसम की स्थिति बनी रहती है, तो बड़े पौधों की तुलना में एकल-कली वाले पौधों की उत्तरजीविता बेहतर होती है ।
4. गन्ने की खेती टिशू कल्चर से तैयार सेटगिंस का उपयोग करके की जा सकती है ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
 (B) केवल 3
 (C) केवल 1 और 4
 (D) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: (C)

व्याख्या:

- **ऊतक संवर्द्धन प्रौद्योगिकी:**
 - टिशू कल्चर एक ऐसी तकनीक है जिसमें पौधों के टुकड़ों को प्रयोगशाला में संवर्द्धित और विकसित किया जाता है ।
 - यह मौजूदा व्यावसायिक कस्मों के रोग-मुक्त बीज, गन्ने का तेज़ी से उत्पादन और आपूर्ति करने का एक नया तरीका प्रदान करता है ।
 - यह मदर प्लांट का क्लोन बनाने के लिये मेरसिस्टेम का उपयोग करता है ।
 - यह आनुवंशिक पहचान को भी सुरक्षित रखता है ।
 - टिशू कल्चर तकनीक, अपने आवरण एवं संरचना की सीमाओं के कारण अलाभकारी साबित हो रही है ।
- **बड चपि प्रौद्योगिकी:**
 - टिशू कल्चर के एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में यह द्रव्यमान को कम करता है और बीजों के त्वरित गुणन को संभव बनाता है ।
 - यह विधि दो से तीन कलियों के रोपण की पारंपरिक विधिकी तुलना में अधिक कफियाती और सुवधिजनक साबित हुई है ।
 - रोपण के लिये उपयोग की जाने वाली बीज सामग्री पर पर्याप्त बचत के साथ रटिर्न अपेक्षाकृत बेहतर प्राप्त होता है । **अतः कथन 1 सही है ।**
 - शोधकर्त्ताओं ने पाया है कि दो कलियों वाले सेट बेहतर उपज के साथ लगभग 65 से 70% अंकुरण दे रहे हैं । **अतः कथन 2 सही नहीं है ।**
 - बड़े सेट खराब मौसम में बेहतर रूप से सुरक्षित रहते हैं, लेकिन एकल कलिका वाले सेट भी रासायनिक उपचार से संरक्षित होने पर 70% अंकुरण देते हैं । **अतः कथन 3 सही नहीं है ।**
 - टिशू कल्चर का उपयोग गन्ने के अंकुरण के लिये किया जा सकता है जिससे बाद में खेत में प्रत्यारोपित किया जा सकता है । **अतः कथन 4 सही है ।** इसलिये विकल्प (C) सही उत्तर है ।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

